चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	4-5-25	4	1-6

बीटी कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप का करें प्रबंधन : प्रो. बीआर काम्बोज

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की। बैठक में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

हकृवि में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज • पीआरओ

निरीक्षण के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की लगेगी डयूटी

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डा. आरपी सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा किसानों के खेतों में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप का निरीक्षण करने के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की डयूटी लगाई जाएगी। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डा. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डा. एनके शर्मा, काटन कारपोरेशन आफ इंडिया से बृजेश कसना, सीआइसीआर सिरसा से डा. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर आफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए। बैठक में राशी सीड्स, अंकुर सीड्स, अज़ीत सीड्स, बायों सीड्स तथा रैलीस सीड्स के प्रतिनिधि भी शामिल हुए और उन्होंने अपने सुझाव भी दिए।

कुलपति प्रो.बीआर काम्बोज ने कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जांएगे। कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	4-4-25	12	2-5

गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 से घटकर 26 फीसद हुआ

इस वर्ष भी गुलाबी सुंडी का करें प्रबंधन : प्रो. काम्बोज

हकृवि में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बैठक की अध्यक्षता करते हुए। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने की।

इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे।

कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाडक़र दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एनके शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया से बृजेश कसना, सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए।

प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभवों को साझा किया। समीक्षा बैठक में मंच संचालन का कार्य सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल वत्स ने किया।

प्रबंधन एवं शोध कार्यों की जानकारी दी

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी.सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	4-4-25	5	1-3

हकृवि में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन पर रिव्यू मीटिंग आयोजित

पिछले साल की तरह गुलाबी सुंडी का करें प्रबंधन : काम्बोज

हिसार, 3 अप्रैल (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुंडी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर .. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

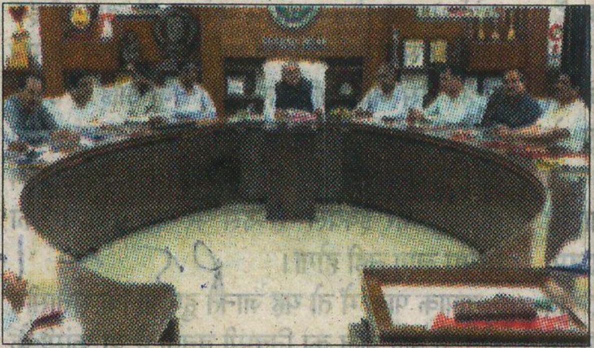

हिसार में बृहस्पतिवार को कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बैठक की अध्यक्षता करते हुए। -हप्र

कुलपति ने कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	4-4-25	5	2-4

गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी गुलाबी सुंडी का करें प्रबंधन : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

हिसार, 3 अप्रैल (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की। कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे। कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

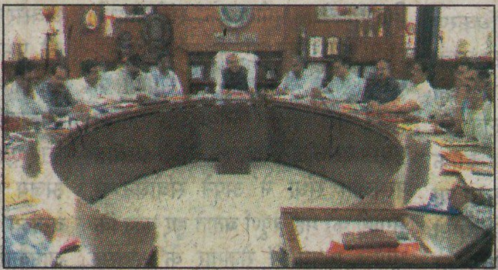

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	03.04.25	--	--

हकृवि में गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी गुलाबी सुंडी का करें प्रबंधन : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

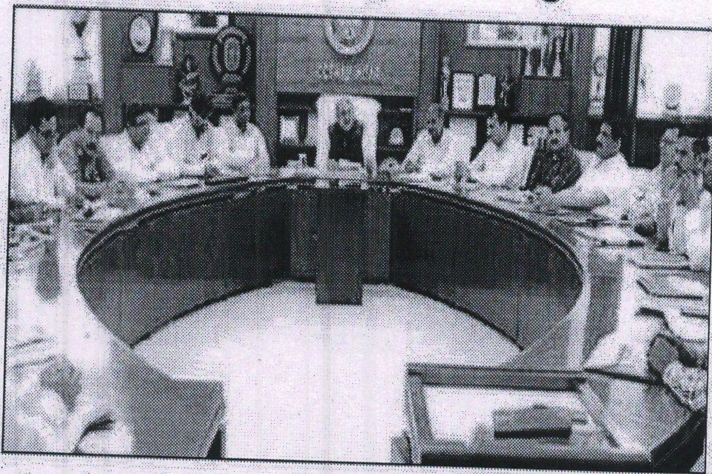

कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे। कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी.सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा किसानों के खेतों में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप का निरीक्षण करने के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी।

पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एनके शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया से बृजेश कसना,सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए। बैठक में राशी सीड्स, अंकुर सीड्स, अजीत सीड्स, बायों सीड्स तथा रैलीस सीड्स के प्रतिनिधि भी शामिल हुए और उन्होंने अपने सुझाव भी दिए। प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभवों को साझा किया। समीक्षा बैठक में मंच संचालन का कार्य सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल वत्स ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	03.04.25	--	--

गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी गुलाबी सुंडी का करें प्रबंधन : प्रो. बी.आर काम्बोज

हकृवि में गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार,। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर . काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

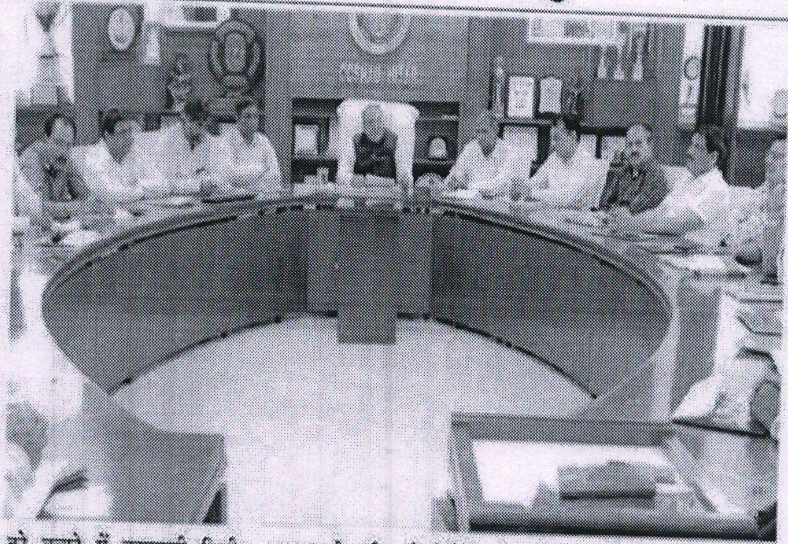

कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे। कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़ कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सके। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी.सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा किसानों के खेतों में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप का निरीक्षण करने के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी।

पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एनके शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया से बृजेश कसना,सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए। बैठक में राशी सीड्स, अंकुर सीड्स, अजीत सीड्स, बायो सीड्स तथा रैलीस सीड्स के प्रतिनिधि भी शामिल हुए और उन्होंने अपने सुझाव भी दिए। प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभवों को साझा किया। समीक्षा बैठक में मंच संचालन का कार्य सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल वत्स ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	03.04.25	--	--

अनुसूचित जाति के किसानों के लिए हकृवि में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

हकृवि द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय : प्रो. बी. आर. काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 3 अप्रैल : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गेहूं एवं जौ अनुभाग, आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा 'किसानों की उपज बढ़ाने के लिए गेहूं एवं जौ कि उन्नत तकनीक' विषय पर अनुसूचित जाति के किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि किसान नवीनतम तकनीकों एवं संसाधनों का उपयोग जरूर करें। उन्नत किस्म के बीजों का चयन, मृदा परीक्षण, सिंचाई प्रबंधन, जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग तथा कीट एवं रोग नियंत्रण जैसी नवीनतम तकनीक अपनाकर कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। शोध एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, इसलिए उन्नत किस्मों के बीज तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों को और अधिक मेहनत के साथ कार्य करना होगा। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक गेहूं की अधिक उत्पादन देने वाली गेहूं की उन्नत किस्में लगातार वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की जा रहीं हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा गत वर्ष के दौरान विकसित की गई 1402 और 1270 देश में सर्वाधिक गेहूं का उत्पादन देने वाली किस्में हैं। उन्होंने कहा कि हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्में देश भर में लोकप्रिय हैं।

कुलपति ने कहा कि जौ हरियाणा की एक महत्वपूर्ण रबी फसल है। जौ का उत्पादन शुष्क और अर्ध शुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में किया जाता है। कम संसाधनों वाले किसानों को पारम्परिक फसलों पर निर्भर न रहने की बजाय सब्जियों, फलों और औषधीय पौधों की खेती अपनाकर अपनी आमदनी बढ़ानी चाहिए। खेती पर बढ़ती लागत और कम हो रही जोत के दृष्टिगत उपरोक्त फसलें कारगर सिद्ध हो सकती हैं। प्रदेश में जौ का उत्पादन बढ़ाने तथा किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किसानों को बैटरी ऑपरेटिड स्प्रे पम्प व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई गेहूं की उन्नत किस्में देश के खाधान्न भण्डार में इजाफा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि किसानों को प्रशिक्षण देने से खाद्य उत्पादन में और अधिक बढ़ोतरी होगी तथा किसान नवीनतम कृषि तकनीको का उपयोग करके कम लागत में अधिक पैदावार ले सकेंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा गेहूं की विकसित की गई उन्नत किस्मों एवं अनुसंधान कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ गजराज दहिया ने सभी का स्वागत किया किया जबकि गेहूं एवं जौ अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी का धन्यवाद किया। मंच का संचालन डॉ. ओपी बिश्नोई ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	03.04.25	--	--

वर्ष 2023 के मुकाबले 24 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा : प्रो. काम्बोज

हकृवि में गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे।

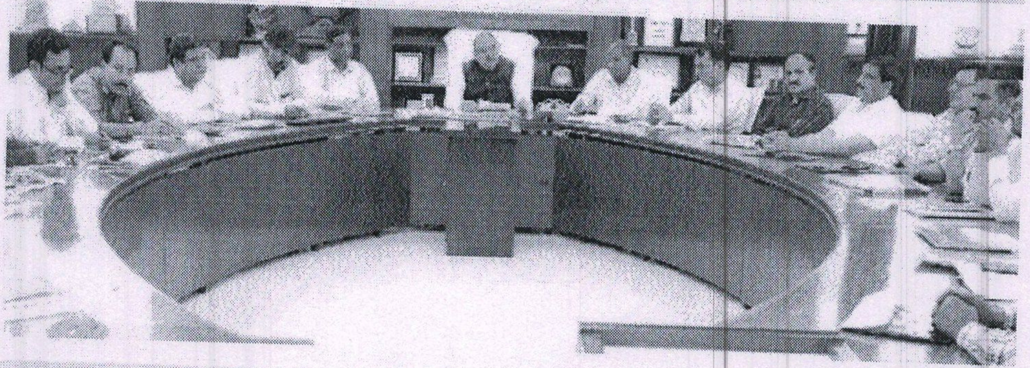

किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें

कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डो एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी. सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया।

पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एनके शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया से बृजेश कसना, सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए। बैठक में राशी सीड्स, अंकुर सीड्स, अजीत सीड्स, बायो सीड्स तथा रैलीस सीड्स के प्रतिनिधि भी शामिल हुए और उन्होंने अपने सुझाव भी दिए। प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभवों को साझा किया। समीक्षा बैठक में मंच संचालन का कार्य सुत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल वत्स ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	03.04.25	--	--

हकृवि में गुलाबी सुण्डी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की। कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे। कुलपति ने कहा कि किसान नरमे की बन्छटियों को खेत में न रखें। अगर रखी हुई है तो बिजाई से पहले इन्हें अच्छे ढंग से झाड़कर दूसरे स्थान पर रख दें और इनके अधखिले टिण्डों एवं सूखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बन्छटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडियों को रोका जा सकें। उन्होंने समन्वित कीट प्रबंधन अपनाने के तरीकों के बारे में भी वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा की। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी.सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा किसानों के खेतों में नरमा फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप का निरीक्षण करने के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एनके शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया से बृजेश कसना, सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए। बैठक में राशी सीड्स, अंकुर सीड्स, अजीत सीड्स, बायो सीड्स तथा रैलीस सीड्स के प्रतिनिधि भी शामिल हुए और उन्होंने अपने सुझाव भी दिए। प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों के प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभवों को साझा किया। समीक्षा बैठक में मंच संचालन का कार्य सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल वत्स ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	04.04.25	--	--

हकृवि में गुलाबी सुंडी के प्रबंधन हेतु प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित

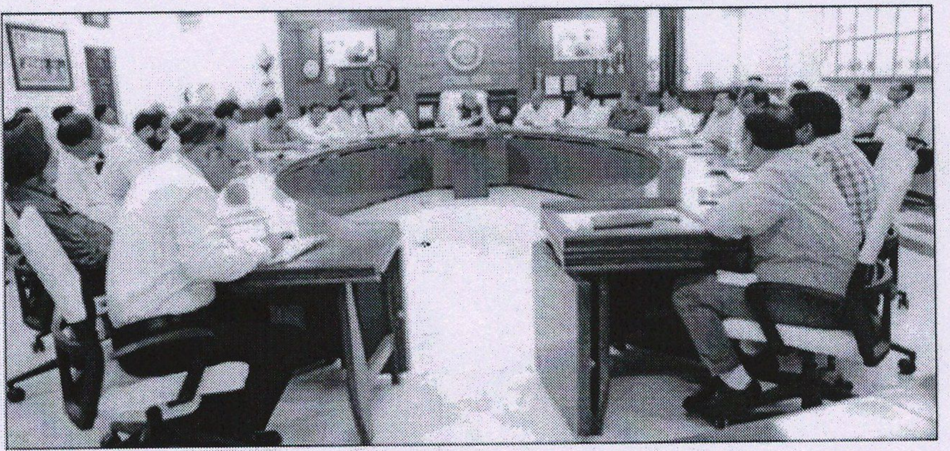

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बैठक की अध्यक्षता करते हुए

हिसार, 3 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फ्लैचर भवन में बीटी कपास में गुलाबी सुण्डी के प्रकोप एवं प्रबंधन विषय पर हितधारकों की प्री-सीजन रिव्यू मीटिंग आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की। इस मीटिंग में हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों, कपास से जुड़ी बीज कंपनियों, प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया व कपास की फसल की आगामी स्थिति पर मंत्रणा कर रणनीति तैयार की।

कुलपति प्रो.बी.आर. काम्बोज ने अपने सम्बोधन में कहा कि गत वर्ष सभी के सहयोग से गुलाबी सुंडी के प्रकोप से कपास की फसल को बचाने में कामयाबी मिली। उन्होंने बताया वर्ष 2023 के मुकाबले वर्ष 2024 में गुलाबी सुंडी का प्रकोप 76 प्रतिशत से घटकर 26 प्रतिशत रहा।

उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक समय-समय पर संयुक्त एडवाइजरी जारी करते रहे हैं जिससे गुलाबी सुंडी के प्रकोप को कम करने में मदद मिली है। इस वर्ष भी एडवाइजरी को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएंगे।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कपास की फसल में गलाबी सुंडी के प्रकोप पर अंकुश लगाने के लिए किए जा रहे प्रबंधन एवं शोध कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक (कपास) डॉ. आर.पी.सिहाग ने कपास की फसल को सुंडी के प्रकोप से निजात दिलाने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी लुधियाना से डॉ. विजय कुमार, एसके राजस्थान एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी बीकानेर से डॉ. एन.के. शर्मा, कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया से बृजेश कसना, सीआईसीआर सिरसा से डॉ. ऋषि कुमार, हरियाणा के कपास उत्पादक जिलों के डिप्टी डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर ने भी अपने सुझाव दिए।